दिनांक - 19 अप्रेल 2022

बेसहारों को ममता बांटने रेणु ने चुना एकाकी जीवन

भूपेश दाधीच

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। माछला मगरा निवासी रेणु

छोछावत जब 22 साल की थी, तभी उनकी मां का दामन छूट गया। अकेलेपन में मां की याद सताती या कोई बात समझ नहीं आती तो रोना आ जाता था। जीवन के इन अनुभव को रेणु ने मन-मस्तिष्क में सहेजते हुए सोचा कि ऐसे कई बच्चे होंगे, जिनकी मां अब इस दुनिया में नहीं है, या ऐसे मां-बाप भी होंगे जो अपने बच्चों का पोषण नहीं कर पाते होंगे और उनकी जिम्मेदारी फोस्टर केयर को सौंप देते होंगे। बस, फिर क्या था, रेणु ने फोस्टर केयर में जाकर देखा तो वहां दो मासूम मिले, जिनके माता-पिता ने उन्हें छोड़ दिया था। ऐसे में रेणु के मन में ऐसी ममता जगी कि उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर इन बच्चों का पालन करने का फैसला ले लिया। तब से अब तक रेणु इन बच्चों का पालन कर रही है। वह कहती है 'मेरी मां तो रही नहीं, लेकिन इन बच्चों को पालकर मैं अपनी मां की भूमिका को महसूस करती हूं। मुझे इसमें काफी संतोष मिलता है। सोचती हूं, मां मेरे पास ही है।' पारस तिराहा के सामने स्वराजनगर में गली नंबर छह में रहने वाली रेणु ब्यूटीशियन व बूटिक का काम करती है। इसके अलावा वह सूरजपोल थाने में सुरक्षा सखी भी है। वह बताती है कि उसके पिता प्रेमकुमार डबोक एयरपोर्ट से सेवानिवृत्त है। दो भाई व एक बहन और है। जब वह 19 साल की थी, तब से उसकी माता बीमार रहने लगी। मां की देखभाल के साथ छोटे बच्चों के परवरिश की जिम्मेदारी उसके कंधों पर आ गई। तीन साल बाद माता का साया सिर से उठ गया तो जिम्मेदारियों दोगुनी हो गई। बहनों और भाइयों की शादी करवाई। वक्त कब गुजर गया कि पता ही नहीं चला। परिवार की जिम्मेदारियों में शादी नहीं करने की इच्छा मन में जागृत हुई। ऐसे में उसका संपर्क फोस्टर केयर संचालक व बाल कल्याण समिति सदस्य शिल्पा मेहता से हुआ। वहां मासूम बच्चियों को देखकर उसका मन इनका लालन-पालन करने के प्रति जागा।

एक नौ साल तो दूसरी सात माह की बच्ची

रेणु ने फोस्टर केयर से दो बच्चियां परवरिश करने के उद्देश्य से गोद ली, जिनमें से एक की उम्र अभी नौ साल व दूसरी की सात माह है। वह बताती है कि इन बच्चियों की शरारतें और अठखेलियां उसके जीवन में कुछ नया करने की उर्जा पैदा करती है। वह बताती है कि आजकल समाज में लड़कियों के प्रति लोगों की सोच बदल गई है, वह दोनों बच्चियों का पालन-पोषण कर यह संदेश देना चाहती है कि लड़का-लड़की सभी समान है। इनके प्रति भेदभाव का दृष्टिकोण नहीं रखा जाए।

जरूरतमंदों को मिल रहा पोषक परिवार

"पालन पोषण देखभाल कार्यक्रम का उद्देश्य देखरेख और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों को परिवार आधारित देखभाल से जोड़ना है, ताकि उनके अपनत्व, स्नेह, प्यार, देखरेख की पूर्ति हो सके। रेणु का जज्बा अन्य लोगों के लिए प्रेरणादायक है।

- शिल्पा मेहता, फोस्टर केयर संचालक व बाल कल्याण समिति सदस्य